पंजीयन संख्या/RNI No.:-TELHIN/2016/70799
ISSN : 2456-9445
खंड-4, अंक-1, पौष - फाल्गुन, 2076/ जनवरी - मार्च, 2020

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

तेलंगाना के उत्सव एवं त्यौहार

डॉ.कुमारी संध्या दास

मैं 1984 से आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में रह रही हूँ। पहली बार आते ही मुझे यह शहर बड़ा ही मनमोहक प्रतीत हुआ। यह अवसर मुझे अपने पिताजी (फौजी) के कारण प्राप्त हुआ जो अक्सर दो से तीन वर्षों में उनका स्थानांतरण हुआ करता था। इस प्रकार से भारत के कई शहरों में मुझे निवास करने तथा संस्कृति, भाषा, भाव एवं विचारों से अवगत होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। बस इसी कारण नए-नए गाँव और नए-नए शहर, नए-नए कस्बों से मैं परिचित हो गई। 10 जून, 1984 में हम सपरिवार हैदराबाद आ गए, न जाने पूर्व, पश्चिम, उत्तर की यात्राएँ तो बहुत हो गई थीं, अब दक्षिण आ गए।

यहाँ के लोगों के विचार, यहाँ की भाषा, यहाँ की संस्कृति ने मुझे पूर्ण-रूपेण अपनी ओर आकर्षित कर लिया।

बस हमने यह निश्चय कर लिया कि हम अब यहाँ से कहीं नहीं जाएंगे। यहाँ की मिट्टी और जल की मैं ऋणी हो गई। आज मन करता है कि यहाँ के तीज-त्यौहारों एवं भाषा संस्कृति के विषय में कुछ लिख ही डालूँ जो मुझे और मेरे अंतर्मन को उत्साहित कर रहे हैं।

सन् 1956 में आंध्र प्रदेश, मद्रास से कई समस्याओं का सामना करते हुए विभाजित हो गया। 1990 से लगातार परिश्रमोपरांत 29 नवंबर, 2009 में वर्तमान माननीय मुख्यमंत्री (श्री के.चंद्रशेखर राव) के अथक प्रयासों से एक और युद्ध आरंभ हुआ। तेलंगाना 'राज्य गठन'। इसका परिणाम आया 2 जून, 2014 को और गठित हो गया भारत का 29 वाँ राज्य 'तेलंगाना'। आज उसी तेलंगाना के 'उत्सवों एवं त्यौहारों' की एक संक्षिप्त-सी गाथा की कुछ झलकियाँ मैं पाठकों के समक्ष समर्पित करना चाहती हूँ।

भारत भाषाओं, संस्कृतियों का सुंदर संगम है। इस संगम के कुछ मोतियों के हार प्रस्तुत हैं। भारत में प्रति माह में कम से कम दो 'उत्सव एवं त्यौहार' तो अवश्य ही मनाए जाते हैं। बारह महीने में तेरह प्रकार के उत्सव का होना अति अनिवार्य है। आइए देखें कुछ तेलंगाना के 'उत्सव एवं त्यौहारों' के बारे में। 'तेलुगु' संभवतः तेलुगु जाति के कारण उसे तेलंगाना भी कहा गया होगा। इस प्रकार प्रदेश या प्रांत को 'तेलुगु देशम्' या 'आंध्र प्रदेशम्' दो नाम दिए गए हैं जो आगे चलकर 'आंध्र प्रदेश' हो गया। तेलंगाना के 9 जिले (दसवाँ हैदराबाद) वर्तमान समय में तेलंगाना के मुख्यतः 33 जिले हैं-हैदराबाद, रंगारेड्डी, मेदक, निज़ामाबाद, करीमनगर, आदिलाबाद, वरंगल (शहरी), खम्मम, नलगोंडा, महबूबनगर हैं। तदोपरांत 11 अक्तूबर, 2016 में कुल 31 जिले हुए हैं-(भद्राद्री कोत्त गूडेम, जगतियाल, जनगाँव, जयशंकर भूपालपल्ली, जोगुलंबा गदवाल, कामारेड्डी, करीमनगर, मोमरम भीम, महबूबाबाद, मंचिरियाल, मेडचल, नागरकर्नूल, निर्मल, पेद्दपल्ली, राजन्ना सिरसिला, संगारेड्डी, सिद्दीपेट, विकाराबाद, वनपर्ति, वरंगल (ग्रामीण), यादाद्री भुवनगिरी एवं सूर्यापेट)। बाद में दो नए जिले नवगठित हुए- मुलुगु एवं नारायणपेट, जिसकी स्थापना 17 फरवरी, 2019 में हुई।

भारतीय वर्षानुसार मास एवं ऋतुओं के नाम-

1. चैत्र 2. वैशाख	1. वसंत
3. ज्येष्ठ 4. आषाढ़	2. ग्रीष्म
5. श्रावण 6. भाद्रपद	3. वर्षा
7. आश्विन 8. कार्तिक	4. शरद
9. मार्गशीर्ष 10. पौष	5. हेमंत
11. माघ 12. फाल्गुन	6. शिशिर

भारतीय संस्कृति में प्रतिदिन शुभ दिन ही माना जाता है। 365 दिनों में करीब 500 त्यौहार यहाँ पाए जाते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख त्यौहारों का उल्लेख यहाँ करने का प्रयास किया गया है।

उगादि :-

चैत्र माह का प्रथम दिन उगादि नाम से मनाया जाता है। नव वर्ष का आरंभ उगादि से होता है। उगादि शब्द 'युगादि' से बना है जिसका अर्थ है युग का आदि अर्थात् आरंभ। महाराष्ट्र एवं कर्नाटक में आज भी 'युगादि' शब्द ही प्रचलित है। आंध्र के लोग उगादि के दिन प्रातःकाल उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर अपने-अपने घरों को फूल तथा रंगोली से सजाते हैं, द्वार तोरण से सजाते हैं। तोरण द्वार पर फूल आम तथा नीम के पत्ते लगाते हैं। यह विशेष दिवस नवीन पंचांग और वर्ष के 'अधि-देवता' की 'शोड़सोपचारों' से पूजा अर्चना की जाती है। उगादि के दिन सभी घर में नीम के फूल, आम, नया गुड़, नई इमली, हरी मिर्च, नमक आदि मिलाकर 'पच्चड़ि' (एक प्रकार का शरबत, अचार, चटनी) अनिवार्य रूप से बनाया जाता है। इस मिश्रण (पच्चड़ि) को सुख दुःख का प्रतीक माना जाता है। दोपहर भोजनोपरांत मंदिर में या घर में बैठकर पंचांग-श्रवण किया जाता है। समय को भगवान माना जाता है। समय के पाँच अंग-तिथि, वार, नक्षत्र, करण एवं योग। ऐसा माना जाता है कि समय-स्वरूप देवता ही इस जगत का पालक एवं रक्षक हैं। तिथि से संपत्ति, वार से आयु, नक्षत्र से पाप हरण, योग से रोग-मुक्ति और करण से कार्य सिद्धि की कामना की जाती है। देवस्वरूप माने जाने वाले इन पाँचों अंगों को ही 'पंचांग' कहा जाता है। उगादि के दिन पंचांग के अनुरूप ही लोग वर्ष भर का अपना कार्य निश्चित करते हैं। राम भक्त उगादि से ही श्री रामनवमी के उत्सव की

तैयारियाँ आरंभ कर देते हैं और चैत्र माह की दशमी के दिन तक यह उत्सव चलाया जाता है।

श्री रामनवमी :-

चैत्र माह की नवमी के दिन श्री रामनवमी (राम का जन्म दिन) मनाया जाता है। उगादि से लेकर श्रीरामनवमी तक पूजा-पाठ, हरिकथा पठन, पुराण पठन, भजन, वाल्मीकि रामायण का पठन आदि नाना प्रकार के मनोरंजक एवं धार्मिक कार्यों में सभी लोग व्यस्त रहते हैं। नवमी के दिन राम-जन्म वृतांत आदि का पठन कर 'पानकम' (गुड़ से बना शरबत, तीर्थ, चरणामृत) और प्रसाद (प्रभु का साक्षात् दर्शन) वितरित किया जाता है। चैत्र शुक्ल दशमी के दिन श्रीराम विवाह होता है। 'भद्राचलम' एवं अन्य मंदिरों में भी अत्यंत धूमधाम से राम एवं सीता का विवाह रचाया जाता है। कई क्षेत्रों में इन दिनों 'वसंत नवरात्री' के नाम से देवी माँ की पूजा भी की जाती है।

हनुमान जयंती :-

चैत्र मास की पूर्णिमा के दिन हनुमान जयंती (हनुमान का जन्म दिन) मनाया जाता है। कुछ जगहों पर श्रीरामनवमी के दिन ही हनुमान जयंती भी मनाने का प्रचलन है। द्वैतवाद के आधार पर हनुमान जयंती एक मुख्य त्यौहार है। इस दिवस पर हनुमान मंदिरों में बड़े उत्साह के साथ रामायण और सुंदरकांड का पाठ किया जाता है।

नरसिंह जयंती :-

नरसिंह को भगवान विष्णु का चतुर्थ अवतार माना जाता है। 'वैशाख शुक्ल' के चतुर्दशी के दिन यह त्यौहार मनाया जाता है। नरसिंह जी का व्रत त्रयोदशी के दिन रखा जाता है। जागरण की प्रथा प्रचलित है। पूजा में 'वडपप्पु' (प्रसाद) तथा 'पानकम' (चरणामृत) का प्रसाद अर्पित किया जाता है।

एरुवाका पूर्णिमा :-

मुख्यतः यह 'कृषि क्षेत्र' से संबंधित त्यौहार है। 'एरुवाका' का अर्थ है जुताई करना। इस दिन किसान (राजा) अपने बैलों को स्नानादि करवाते हैं तथा नई रस्सी (पगहा) एवं जुआ पहनाकर खेतों में जुताई करते हुए नई फसल की शुरुआत करते हैं।

इस त्यौहार का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है तथा जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कहानी 'पुरस्कार' में भी परिलक्षित होता है। 'विष्णु पुराण' में इसे 'सीता यज्ञ' की संज्ञा से विभूषित किया गया है। आंध्र एवं तेलंगाना के खेतिहर बड़े उमंग एवं उत्साह के साथ इसका आयोजन करते हैं।

मंटेट्टुअमावस :-

जेठ मास की अमावस्या को किसानों द्वारा मनाया जानेवाला है यह त्यौहार 'एरुवाका' से आरंभ की गई खेती को तीव्रता का संकेत मिलता है। तेलंगाना क्षेत्र का यह एक प्रसिद्ध त्यौहार है। इस सुअवसर पर किसान अपने बैलों की पूजा करते हैं तथा प्रसाद रूप में उन्हें चक्करपोंगलि या परमान्नम बनाकर खिलाया जाता है। यह त्यौहार कृषकों का मुख्य त्यौहार माना जाता है।

तोलि (प्रथम) एकादशी :-

आषाढ़ की शुक्ल पक्ष एकादशी को तोलि-एकादशी की संज्ञा से विभूषित किया जाता है। इसे 'शयन-एकादशी' भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि भगवान विष्णु चार मास तक विश्रामावस्था में लीन हो जाते हैं। 'तोलि एकादशी' से लेकर 'कार्तिक-शुक्ल-

एकादशी' तक। इसे 'चतुर्मासा' भी कहा जाता है। कई लोग इस समय 'चतुर्मासा दीक्षा' भी लेते हैं। इन दिनों 'तप' के माध्यम से 'स्व' शक्ति को बढ़ाया जा सकता है। उत्थान एकादशी (उठावन) का व्रत रखकर 'रात्री' का जागरण करते हैं।

इस माह में नवविवाहित बालक (पुरुष) एवं बालिका (स्त्री) अपने-अपने घर (नैहर) में ही रहते हैं। सास-ससुर के घर (नव दंपत्ति) एक साथ नहीं रह सकते हैं। इसलिए इसे 'विरह मास' भी कहा जाता है। वैज्ञानिक तथ्यानुसार इस माह में गर्भधारण करना कष्टदायक सिद्ध हो सकता है। गर्मी का समय 'जच्चा-बच्चा' दोनों के लिए हानिकारक माना जाता है। अतः दोनों के लिए अहितकारी सिद्ध हो सकता है। इसी कारण इस प्रकार की परंपरा का चलन है।

नागपंचमी/नागुला चविति :-

बौद्ध ग्रंथानुसार आंध्र भूमि को 'नाग भूमि' के नाम से भी जाना जाता है। अधिकतर गाँवों तथा शहरों में भी 'नाग मंदिर' नाग प्रतिमाएँ पाई जाती हैं। सावन मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को नागपंचमी मनाई जाती है। आज के दिन लोग दूध, अंडा आदि नाग देवता के बिलों में उन्हें समर्पित करते हैं। बिलों को सुंदर ढंग से सजाया जाता है तथा 'चीलमिडि' (चावल को पीसकर गुड़ मिलाकर बनाया जाता है) और 'चिम्मिलि' (तिल, गुड़ से बना प्रसाद) चढ़ाकर नाग देवता को भोग समर्पित किया जाता है। बिल की पूजा आरती परिक्रमा करने के बाद बिल की थोड़ी सी मिट्टी कानों में आभूषण की तरह सजाकर लेपन करते हैं। मान्यता अनुसार 'नाग-देवता' की पूजा करने से संतान प्राप्ति होती है। 'नागुला-चविति' या नाग पंचमी का उल्लेख गरुड़-पुराण में परिलक्षित होता है।

बोनालु त्यौहार :-

बोनालु तेलंगाना का विशेष त्यौहार है। हैजा बीमारी को रोकने के लिए सत्रहवीं शती में यहाँ के लोगों ने पहली बार देवी माँ की पूजा की थी। उन दिनों से आज तक यह त्यौहार बड़ी ही धूमधाम से आषाढ़ मास में मनाया जाता है। आषाढ़ मास में मनाया जाने वाला यह त्यौहार गोलकोंडा स्थित जगदंबिका मंदिर में 'एदुर्कोलु' (स्वागत) उत्सवों से बोनालु प्रारंभ होता है। इस सुअवसर पर 'अम्मा बेलेल्लिनादो...' (माता जी आ रही हैं) गीत गाते हुए देवी माँ का स्वागत करते हैं। दस दिनों तक इस स्थान के सभी मंदिरों में बोनालु समर्पित किए जाते हैं और दस दिन बाद सिकंदराबाद स्थित उज्जयिनी महाकाली मंदिर में यह उत्सव आरंभ होता है। तत्पश्चात् निर्मित देवी मंदिर, जैसे उनके नाम पर 'अक्कना-मादन्ना' मंदिर की संज्ञा से अभिहित किया जाता है, में बोनालु अर्पित करना आरंभ हो जाता है।

बोनम का अर्थ है- भोजन। बोनालु उत्सव के समय स्त्रियाँ मिट्टी से बने घड़े (मटका) में 'भात' बनाकर उसके ऊपर दही एवं गुड़ रखती हैं, उस घड़े को बाहर से हल्दी, कुमकुम तथा नीम के पत्तों से सजाया जाता है जिसे 'बोनम' कहा जाता है। बोनम को सिर पर रखकर मंगल ध्वनियों के मध्य देवी माँ के मंदिरों में समर्पित किया जाता है। इस दिन भविष्यवाणी (रंगम) एक विशेष आकर्षण होता है। किसी भी अविवाहित स्त्री पर देवी माँ का आह्वान किया जाता है। वह स्त्री कच्चे घड़े पर पाँव रखकर पूर्ण उत्साह से भविष्यवाणी करती है। इस भविष्यवाणी पर लोगों को पूर्ण विश्वास होता है। 'रंगम' के बाद ही पोतुराजु का वीरंगम रहता है। शरीर पर हल्दी मुँह में नींबू-आँखों में काजल, माथे पर

तिलक भयंकर-सा रूप लिए हुए वह कुम्हड़े की बलि देवी को अर्पित करता है। इस बलि को 'कूष्मांड बलि' के नाम से जाना जाता है। लगभग एक माह तक सिकंदराबाद तथा हैदराबाद में यह त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। सभी मंदिरों के समीप काफी दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती है। गली-नुक्कड़ एवं सड़कों पर यह प्रसिद्ध गीत- 'मायदारि मैसम्मो... मैसम्मा' जैसे गीत सुनने को मिलते हैं। कुछ लोग गीत के साथ-साथ नृत्य भी करते हुए दिखाई पड़ते हैं। इस समय मन प्रसन्न एवं प्रफुल्लित हो उठता है।

वरलक्ष्मी व्रत :-

श्रावण पूर्णिमा के पहले आने वाले शुक्रवार को 'वरलक्ष्मी व्रत' रखा जाता है। सुहागिन स्त्रियाँ अपने सुहाग तथा संतान वृद्धि के लिए यह व्रत रखती हैं। घर में ही मंडप बनाकर 'मुग्गु' (रंगोली) के मध्य कलश रखकर, कलश पर नारियल रखकर उसे 'लक्ष्मी माँ' का रूप प्रदान किया जाता है। लक्ष्मी जी के इस स्वरूप को यथाशक्ति आभूषणों से सजाया जाता है। 'पूजा' में नौ प्रकार के प्रसाद चढ़ाए जाते हैं। जितने भी प्रकार के पुष्प उपलब्ध हों उन पुष्पों, हल्दी, कुमकुम आदि से लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है। पूजा के बाद स्त्रियाँ वरलक्ष्मी गाथा पढ़ती हैं। आस-पड़ोस की अन्य स्त्रियों को अपने घर बुलाकर यथाशक्ति हल्दी, कुमकुम, 'शनगलु' (भिगोया हुआ चना) से युक्त 'तांबूलम' (पान, सुपारी) देकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। विवाहोपरांत नव पुत्र-वधू से यह व्रत रखवाया जाता है। श्रावण मंगलवार के दिन कुँवारी कन्याएँ मन पसंद वर की प्राप्ति हेतु 'मंगलगौरी' (लक्ष्मी जी) का व्रत रखती है। माँ लक्ष्मी जी को प्रसन्न करने के लिए पुष्प, कुमकुम, हल्दी, काजल तथा नारियल आदि से पूजा की जाती है। इस प्रकार लक्ष्मी माँ को प्रसन्न कर उनके आशीर्वाद की कामना की जाती है।

श्रावण पूर्णिमा/राखी पूर्णिमा :-

श्रावण पूर्णिमा त्यौहार विद्यारंभ सूचक माना जाता है। ब्राह्मण प्रातः उठकर पूजादि के पश्चात् आत्मपरिशीलन करने वाले 'कामोकार्षित' मंत्र का 108 बार पठन करते हैं। दोपहर में नदी एवं तालाब में स्नान करते समय ऋषियों एवं बुजुर्गों को स्मरण करते हुए 'तर्पण' देते हैं। प्रत्येक वेद एवं उपनिषद के 'आद्यंत' मंत्रों का पठन करते हैं। इस अवसर पर नया जनेऊ धारण करने की परंपरा है। भाई-बहन के रिश्ते को गरिमा प्रदान करने वाला त्यौहार 'रक्षाबंधन' भी उत्साह पूर्वक मनाया जाता है।

कृष्णाष्टमी :-

श्रावण माह की अष्टमी के 'रोहिणी नक्षत्र' के दिन श्री कृष्ण का जन्मदिन मनाया जाता है, जिसे कृष्णाष्टमी, जन्माष्टमी तथा गोकुलाष्टमी के नाम से जाना जाता है। आंगन में कृष्णाष्टमी के दिन कृष्ण के नन्हें-नन्हें पद चिह्न चित्रित किए जाते हैं, जो घर में आते हुए से प्रतीत होते हैं। आज के दिन उपवास रखा जाता है। रात को बारह बजे भगवान कृष्ण को भोग लगाकर सभी प्रसाद ग्रहण करते हैं। बालकृष्ण को झूला झुलाना, स्थान-स्थान पर 'मटकी' बाँधकर उसे तोड़ने की परंपरा प्रचलित है। बालक से वृद्ध तक इसका आनंद उठाते हैं और उत्साहित दिखाई पड़ते हैं।

गणेश चतुर्थी :-

भाद्रपद मास की चतुर्थी को मनाया जाने वाला यह त्यौहार 'विनायक चविति' के नाम से जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि गणेश भगवान की पूजा करने से सभी विघ्न स्वयं ही दूर छट जाते हैं। 'पालवेल्लि' (एक प्रकार का मंडप, जो बाँस से बना होता है) को

खूब सजाया जाता है। 21 प्रकार के फल-पत्र एवं 21 प्रकार के प्रसादों से गणेश प्रतिमा की पूजा की जाती है। गणेश प्रतिमा के समीप 'असंख्य दीप' प्रज्ज्वलित किए जाते हैं, जो अगले दिन शाम तक जलता रहते हैं। कुछ तीन दिन, पांच दिन, सात दिन या नौ दिनों तक लगातार यह गणपति नवरात्रोत्सव मनाते हैं। गणेश की महिमा को प्रथम पूजनीय, विघ्नहर्ता के रूप में बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। नौवें दिन जुलूस निकालकर बड़ी श्रद्धा से उन्हें (गणेश मूर्तियाँ) जल में विसर्जित करते हैं। ऐसी मान्यता है कि गणेश जी को अपनी माता गंगा में विसर्जित करने पर भक्तजन संपूर्ण वर्ष आनंदित एवं सुखी रहते हैं।

महालया अमावस :-

भाद्रपद अमावस को पितृ देवताओं के रूप में मनाया जाता है। गंगा, कावेरी, गोदावरी, कृष्णा आदि नदियों में उस दिवस पर पिंड अर्पित किया जाता है। ब्राह्मणों को 'स्वयंपाकम', 'सीधा' (ब्राह्मण के भोजन के लिए आवश्यक सामग्री) देकर पितृ देवताओं को तर्पण अर्पित किया जाता है। इस समय को 'पितृ पक्ष' के नाम से भी जाना जाता है। स्वयं संतुष्ट होकर पितरों को तृप्त करने वाला सदैव सुख एवं संतुष्टि पाता है।

बतुकम्मा त्यौहार :-

तेलंगाना क्षेत्र का प्रसिद्ध त्यौहार माना जाता है। यह त्यौहार दुर्गाष्टमी के दिन मनाया जाता है। तेलंगाना संस्कृति को दर्शाने वाले इस त्यौहार के सुअवसर पर 'मंगलगौरी' एवं 'बतुकम्मा' देवियों की पूजा की जाती है। यह थाली में तरह-तरह के जंगली फूलों से 'गोपुर' आकार का बनाया जाता है, इसे ही 'बतुकम्मा' की संज्ञा दी जाती है। इसे स्त्रियाँ बड़े कलात्मक ढंग से सजाती हैं। इस थाल के गोलाकार वृत्त में नृत्य करती हुई स्त्रियाँ इस गीत 'बतुकम्मा-बतुकम्मा उय्याला... पाडि पंटलकु उय्यालो' गाते हुए तालियाँ बजाते हुए इसका भरपूर आनंद लेती हैं। इस त्यौहार से शारीरिक निरोगता का संचार होता है, ऐसी मान्यता है। तेलंगाना का यह त्यौहार नौ दिन तक चलता है। यह उत्सव तन-मन में तरोताज़गी भर देता है। बाद में बतुकम्मा को जल में विसर्जित कर दिया जाता है।

विजय दशमी :-

विजयदशमी आश्विन मास की दशमी के दिन मनाया जानेवाला त्यौहार है। विजयदशमी की प्रसिद्धि नवरात्रि उत्सव से है। माँ दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है-बाला त्रिपुर सुंदरी, महालक्ष्मी, गायत्री, अन्नपूर्णा, सरस्वती, श्री ललिता त्रिपुरसुंदरी, दुर्गा महिषासुरमर्धिनी, राजराजेश्वरी और दसवें दिन विजयदशमी मनाई जाती है। आंध्र एवं तेलंगाना में 'नवरात्रि' के समय स्त्रियाँ घर में 'बोम्मलकोलुवु' का आयोजन करती हैं तथा अपने इष्ट मित्रों को आमंत्रित कर यथाशक्ति प्रसाद वितरित करती हैं।

विजयदशमी की संध्या के समय 'शमी' वृक्ष के पत्ते (स्वर्ण) एक-दूसरे को देकर बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते हैं। 'आयुध पूजा' भी दशहरा का एक अंग माना जाता है। दस दिन तक बड़े उत्साह एवं उमंगों से यह त्यौहार बनाया जाता है।

कार्तिक माह :-

दीपावली के अगले दिन से यह माह आरंभ होता है। इस समय 'दीपदान' का विशेष महत्व है। कार्तिक मास में 'वन भोजन' के नाम से आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर बड़े स्नेह से भोजन करने का प्रचलन भी है।

मकर संक्रांति :-

मार्गशीर्ष एवं पौष मास में यह त्यौहार बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। नई फसल का खेतों से आना (लक्ष्मी आगमन) एक विशेष प्रकार की हिलकोरे मन में उत्पन्न करती हैं। यह चार दिनों तक लगातार चलने वाला त्यौहार है। पहले दिन 'भोगी', दूसरे दिन 'संक्रांति', तीसरे दिन 'कनुमु' और चौथे दिन 'मुक्कनुमा' मनाया जाता है। तेलंगाना में पतंग उड़ाने की परंपरा भी है। भोगी के अवसर पर 'पुलगम' (प्रसाद) अथवा 'पोंगलि' (मीठे चावल/भात/खीर) बनाकर प्रसाद अर्पित किया जाता है। शाम के समय 'भोगिपंटलु' (बेर, गेंद के फूल की पंखुड़ियाँ, सिक्के, नारियल के टुकड़े आदि) से छोटे बच्चों को आशीर्वाद दिया जाता है। भोगी से इस दिन तक 'बोम्मलकोलुवु' का आयोजन किया जाता है जिसे 'संक्रांति कोलुवु' की संज्ञा से विभूषित किया जाता है। घर के सभी सदस्य नव वस्त्र धारण कर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।

रथ सप्तमी, महाशिवरात्रि, होली, तुलसी विवाह, वैकुंठ एकादशी, दीपावली, भाई दूज या यम द्वितीया, शनि-त्रयोदशी, रमज़ान, ईद-उल-फितर, ईद-उल-जुहा या बकरीद, मिलाद-उन-नबी, मुहर्रम, क्रिसमस, गुडफ्रायडे, ईस्टर आदि सभी त्यौहार संपूर्ण भारत में बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ मनाते जाते हैं। वैसे ही उपर्युक्त सभी उत्सव एवं त्यौहार तेलंगाना में भी पूर्ण जोश, उमंग एवं उत्साह के साथ मनाए जाते हैं। मेरी तेलंगाना छह वर्ष की बालिका ही है किंतु इसके पास संस्कृति और संस्कारों की धरोहर तो अवश्य परिलक्षित होती है। तेलंगाना की गति सदैव तीव्र एवं सुंदर रहे यही मेरी मंगलकामना है।

संदर्भ सूची :

1. भाषा और समाज, डॉ.बोडेपूडि वेंकटेश्वर राव
2. आंध्र की सांस्कृतिक संरचना, डॉ.शैलाडा पद्मावती
3. Google.com
4. पंचांग
5. हिंदी कैलेंडर